साहेबगंज जिला, झारखंड से स्थिति अध्ययन

दिहारी गांव में अच्छे उद्देश्य से परिवर्तन लाना

परिचय

साहेबगंज जिले की हाजीपुर पंचायत में दिहारी गाँव का नया ही चित्र है। जिला जल एवं स्वच्छता विभाग ने कार्यक्रम में यह शामिल किया कि स्वच्छ तथा अस्वच्छ पेयजल स्रोतों की पहचान की जाए जिससे इस गांव के लोगों के संपूर्ण स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार हुआ है।

साहेबगंज के जल स्रोत अधिक आर्सेनिक से प्रभावित हैं और इसका गहरा असर लोगों के स्वास्थ्य पर दिखा है। गांवों में बहुत से लोगों की हड्डियाँ विकृत, चर्म में धब्बे, प्रभावित ऊंगलियां तथा पैरों के नाखून प्रभावित हैं। महिलाओं तथा बच्चों की स्वास्थ्य की कमजोर स्थिति को बेहतर बनाने के विचार से डीडब्ल्यूएसडी तथा यूनीसेफ, झारखंड के बीच भागीदारी की शुरूआत हुई।

आर्सेनिक का असर

1. आर्सेनिक एक सूचीबद्ध हानिकारक पदार्थ है तथा फेफड़ों तथा चर्म के कैंसर के लिए जिम्मेदार कासीनोजेन माना गया है। यह एक इकट्ठा होने वाला पदार्थ है जो धीरे-धीरे शरीर से मूत्र, बालों, उंगलियों, पैर के नाखूनों और चर्म तक फैलता है। गाँव की बहुत बड़ी आबादी ढ़ाँचागत तथा क्रियात्मक निष्क्रियता का नमूना दर्शाती है। ग्रामीणों की चमड़ी में धब्बे हैं, उंगलियों तथा पैरों की उंगलियों में धब्बे हैं।

   दिहारी गांव में 300 ग्रामीणों को पेयजल उपलब्ध कराने के लिए लगभग 200 हैंडपंप हैं। तथापि, लगभग 80% हैंडपंपों में उच्च मात्रा में आर्सेनिक है जिसे पेयजल का सुरक्षित जल स्रोत घोषित करने से पूर्व शुद्धिकरण की आवश्यकता है। इस तथ्य के साथ हम कैसे मान सकते हैं कि गाँव के लोग स्वस्थ तथा खुशहाल जीवन व्यतीत कर पाएँगे? डीडब्ल्यूएस विभाग और यूनीसेफ मिलकर साहेबगंज में काम कर रहे हैं ताकि पानी में आर्सेनिक की उच्च मात्रा को कम किया जा सके।

आर्सेनिक की मात्रा को कम करने के लिए एक लघु प्रयास

2. पीएचईडी ने गाँव वालों को भविष्य में उच्च मात्रा में आर्सेनिक युक्त जल का सेवन करने से बचाने के लिए कुछ तरीकों की पहचान की है। स्वच्छ तथा अस्वच्छ पेयजल स्रोतों को श्रेणीबद्ध करने के लिए हैंड पंपों के स्पाउट को अलग-अलग रंगों से रंगना शुरू किया गया। ज्यादातर लोग इस बात को नहीं समझते हैं कि आर्सेनिक युक्त जल पीने तथा खाना पकाने के लिए असुरक्षित है, परंतु उसका उपयोग कपड़े धोने, स्नान करने तथा अन्य कार्यों के लिए किया जा सकता है। गांव वालों को पेय तथा गैर पेय जल में अंतर करवाने के लिए लाल तथा नीले रंग से हैडपंपों के स्पाउट को रंगा गया है। जबकि नीले रंग के स्पाउट वाले हैंड पंप से पीने तथा खाना पकाने के लिए जल लिया जाता है।
3. 34 हैंड पंपों में स्थापित आर्सेनिक निवारक यंत्र से सुरक्षित पेयजल निकलता है। लोगों ने सुरक्षित स्रोतों से पानी लेना शुरू कर दिया है क्योंकि उच्च मात्रा में आर्सेनिक युक्त जल से यह जल अधिक स्वाद वाला हेाता है।

कम साक्षर व लोगों को आवश्यक कार्य करने की सूचना कैसे दें? यूनीसेफ ने बीमारी को और अधिक फैलने से रोकने के लिए गांववालों को आर्सेनिक संदूषित जल के दुष्प्रभावों तथा स्वच्छ पेयजल स्रोतों के उपयोग के संबंध में शिक्षा देने का दुष्कर कार्य शुरू किया है।

समुदाय भागीरीदारी सहित सामुदायिक जागरूकता

लोगों से आर्सेनिक से उनके स्वास्थ्य पर होने वाले खतरे के विषय में संवाद

करने का कार्य यूनीसेफ ने स्वयं किया है। परिवारों तथा समुदायों तक पेयजल के सुरक्षित स्रोतों का उपयोग करने हेतु विशिष्ट संदेशों को पहुँचाने के लिए यूनीसेफ ने प्रणालीबद्ध संप्रेषण मध्यवर्तन किया है।

पेयजल के सुरक्षित उपयोग को बढ़ावा देने के लिए सुप्रशिक्षित नाटक मंडली गांवों में जाती है और नुक्कड़ नाटक करती है। नुक्कड़ नाटक से लोगों में सुरक्षित पेयजल के उपयोग के महत्व की अधिक समझ उत्पन्न होती है। लोग सुरक्षित पेयजल स्रोतों का उपयोग करने लगे हैं। महिलाएँ इस बात पर अधिक ध्यान देने लगी है कि पीने हेतु

सुरक्षित जल का ही उपयोग हो। महिलाएँ सुनिश्चित करती हैं कि उनके बच्चे स्वच्छ जल ही पीएँ।

4. इससे गाँव वालों को अधिक आर्सेनिक युक्त जल पीने से बहुत हद तक रोका जा सका है।

भविष्य की योजना

सुरक्षित जल स्रोतों से जुड़ी पाइप द्वारा जलापूर्ति स्कीम से दिहारी के सभी ग्रामीणों को पेयजल उपलब्ध कराया जा रहा है। डीडब्ल्यूएस विभाग द्वारा उठाए गए सकारात्मक प्रयास ने लोगों की जिंदगियों में रंगों को भर दिया है। गाँव वाले इससे ज्यादा और क्या चाहेंगे?

चित्र